आदरणीय शिक्षकगण,

आशा है आप सकुशल होंगे। आपके त्याग और तप से ही एक सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण संभव है।

शिक्षा के अधिकार कानून के लागू होने के बाद शिक्षा-क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी जन के दायित्व और भी बढ़ गए हैं। 6-14 आयु वर्ग के बच्चों का यह अधिकार है कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे और इसे प्रदान करने के सभी उपादानों को संगठित, संतुलित और न्यायपूर्ण तरीके से उन तक पहुँचाना हमारा दायित्व है।

माँ-पिता के बाद बच्चों से सीधा संवाद यदि कोई स्थापित करता है, तो वह हैं आप शिक्षक। शिक्षक ही बच्चों का स्वाभाविक रूप से मार्गदर्शन कर उन्हें उनकी रुचि के अनुसार आगे बढ़ने में प्रेरक का कार्य करते हैं।

बिहार की नयी पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तकें बच्चों को खुद करके सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। आप इस तथ्य से भली-भाँति अवगत होंगे। पाठ्यपुस्तक में संयोजित पाठ के उद्देश्य क्या हैं? उनसे गुजरकर बच्चों में कौन-से कौशल विकसित होंगे ? हम उनका सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कैसे करेंगे? शिक्षकों को इसकी स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। आपकी शैक्षिक ज़रूरतों, वर्ग-कक्ष में पाठ विनिमयन में आपको सहयोग करने के उद्देश्य से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका का निर्माण शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए किया गया है। यह प्रत्येक पाठ में उद्देश्य के साथ-साथ पाठ विनिमयन में की जाने वाली गतिविधियों के संयोजन एवं तद्नुसार सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की रूप-रेखा तैयार करने में आपका सहयोग करेगी, ऐसी आशा है। प्रथम चरण में कक्षा I से V तक की हिन्दी एवं गणित विषय की शिक्षण सहयोग संदर्शिका का विकास यूनिसेफ, बिहार के सहयोग से एस. सी.ई.आर.टी., पटना, बी.ई.पी. एवं बी.ई.क्यू.एम. के संयुक्त प्रयास से किया गया है। शेष संदर्शिकाओं का विकास प्रक्रियाधीन है।

आपसे अनुरोध है कि आप वर्ग विनिमयन और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में इस संदर्शिका की सहायता लें तथा इस संदर्शिका को और मूल्यवान बनाने हेतु हमें सुझाव दें। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

धन्यवाद!

(राहुल सिंह)
राज्य परियोजना निदेशक
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दिशाबोध

राहुल सिंह
राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

हसन वारिस
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना

मधुसूदन पासवान
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रारंभिक एवं औपचारिक शिक्षा
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

दीपक कुमार सिंह
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, नवाचारी शिक्षा,
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना-सह-
कार्यक्रम प्रबंधक, बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

राजीव सिन्हा
प्रोग्राम मैनेजर, यूनिसेफ, पटना

डॉ. एस.ए.मोईन
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा
एस.सी.ई.आर.टी., पटना

डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी
प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन
एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर (वैशाली)

अकादमिक संयोजक

डॉ. श्वेता सांडिल्य
शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना

नीरज दास गुरु
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

नलिन कुमार मिश्र
संयुक्त कार्यक्रम प्रबंधक,
बिहार शैक्षणिक गुणवत्ता मिशन, पटना

डा0 उदय कुमार उज्जवल
अपर राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

भारत भूषण
विशेषज्ञ, शिक्षक-प्रशिक्षण
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

डा0 नरेश कुमार सिंह
विशेषज्ञ, अनुश्रवण एवं अकादमिक अनुसमर्थन
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

लेखन-सहयोग

जितेन्द्र कुमार, सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, महमदा, परैया, गया, **कृत प्रसाद,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, चंडासी, नूरसराय, नालंदा, **अरशद रज़ा,** सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा, रहुई, नालंदा, **अरविन्द कुमार,** साधनसेवी, प्रखंड-संसाधन केन्द्र, नगर निगम, गया, **विकास कुमार,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, बसकुटिया, चकाई, जमुई, **मनोज त्रिपाठी,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, फरना, बड़हरा, भोजपुर

समीक्षा एवं संशोधन-परिमार्जन

बिरेन्द्र सिंह रावत, शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **संजय शर्मा,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **डॉ. राकेश सिंह,** शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली, **चन्दन श्रीवास्तव,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, **कृष्णकांत ठाकुर,** पूर्व राज्य साधनसेवी, बी.ई.पी., पटना, **सुमन कुमार सिंह,** मध्य विद्यालय, कौड़िया बसंत, भगवानपुर हाट, सीवान, **मनीष रंजन,** प्राथमिक विद्यालय, मित्तनचक मुसहरी, सम्पतचक, पटना

शिक्षकों के लिए संदेश

पाठचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ-योजनाओं पर चर्चाएँ होती रही हैं। पाठचर्या एवं पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए पाठ-योजना की जरूरत पर भी बल दिया जाता रहा है। किसी भी कार्य को करने के लिए योजना की जरूरत होती है। प्रत्येक पाठ का एक उद्देश्य होता है। हर पाठ में बच्चों के लिए कुछ दक्षता निहित होती है। शिक्षक को उद्देश्य ज्ञात होना चाहिए क्योंकि लक्ष्य का पता हो तो रास्ता ढूँढ़ना आसान होता है।

बिहार पाठचर्या की रूप-रेखा-2008 के अनुसार, ''बच्चे अनुभव के जरिए, कुछ बनाते और करते हुए, प्रयोग करते, पढ़ते, बहस करते, पूछते, सुनते, सोचते और जवाब देते हुए तथा खुद को वाणी, गतिविधि तथा लेखन के जरिए अभिव्यक्त करते हुए सीखते हैं।'' अतः सिखाने के लिए आवश्यक है कि उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखा जाय। यह शिक्षण-संदर्शिका शिक्षकों के मार्गदर्शन हेतु है। इसमें प्रत्येक पाठ का उद्देश्य एवं बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को ध्यान में रखकर किए जाने वाले क्रिया-कलापों की चर्चा की गयी है।

परंपरागत पढ़ाई में शिक्षक पूरे वर्ग से एक साथ बातचीत करते हैं जबकि बच्चे अलग-अलग दक्षता स्तर के होते हैं। ऐसे में कुछ बच्चे सीखते हैं, कुछ कम सीखते हैं, कुछ बहुत कम सीखते हैं। किसी विषय-वस्तु को पढ़ाने से पहले उसका संदर्भ बनाना या उसकी भूमिका बनाना इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है कि यह बच्चों को वह संदर्भ उपलब्ध कराता है जिससे वे नये सिखाये या पढ़ाये जा रहे ज्ञान को अपने ज्ञान के मौजूदा स्तर से जोड़ते हुए आगे नया सीख पाएँ। बशर्ते यह काम ठीक से व बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर किया जाय। शिक्षकों को कुछ हद तक बच्चों को पाठ से जोड़ने वाली एक सार्थक बातचीत करना जरूरी है। कक्षा में पाठ की भूमिका बनाते हुए बोले गये वाक्य बच्चों के वश में न रहने वाले मन को विषय से जोड़ता है। परन्तु, हमारा उद्देश्य यहाँ पूरा नहीं होता, यहाँ समूह-कार्य की आवश्यकता महसूस होती है।

समूह में बच्चे अपने दोस्तों से सीखते हैं। एक दूसरे से ज्यादा खुलते हैं। हम बच्चों को आपस में बातचीत कर सीखने का मौका नहीं देते। शिक्षक का ऐसा मान लेना कि वही सिखाने वाले हैं, गलत है। वास्तव में प्रत्येक बच्चा किसी शिक्षक के वनिस्पत हम उम्र साथियों से ज्यादा सीखता है। साथियों के साथ प्रश्न पूछने की आजादी तथा सरलता से तथा दोस्ताना माहौल में सीखने का मौका मिलता है। सहभागिता की भावना का विकास होता है। बच्चे वर्ग में शिक्षक द्वारा बतायी गयी बातों को जब समूह में एक दूसरे की सहायता से करते हैं तो समझ सुदृढ़ होती है।

सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर पाना ही सीखने की उपयोगिता है। बच्चे जब खुद करके सीखेंगे तो उनका आत्मबल बढ़ेगा, अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ेगी और तभी सीखी हुई बातों का उपयोग जीवन में कर सकेंगे। अतः सिखाने की प्रक्रिया में व्यक्तिगत कार्य आवश्यक हो जाता है। व्यक्तिगत रूप से काम करने से बच्चा अपने अनुभवों को व्यवस्थित कर सकता है। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को प्रश्न करने का ज्यादा मौका दें। स्वाध्याय करने तथा मूल्यांकन दोनों ही कामों के लिए व्यक्तिगत कार्य किया जा सकता है। व्यक्तिगत कार्य की सफलता तभी है जब प्रत्येक बच्चे के द्वारा किये गये काम को जाँचा जा सके। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि बच्चों को दिये जाने वाले कार्य चुनौतीपूर्ण हों। यह चुनौती न बहुत आसान हो, और न बहुत कठिन। चुनौतियाँ बच्चों के उत्साह को बनाये रखती हैं तथा उत्साह सीखने की प्रक्रिया को तीव्र करता है।

प्रत्येक शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक बच्चा वर्ग-कक्ष में दिये गये अभ्यासों को तथा पाठ्य-पुस्तक के अंत में दिये गये लिखित एवं मौखिक अभ्यासों को करे तथा उन अभ्यासों की जाँच पूरे धैर्य के साथ की जाए ताकि बच्चों को

अगर कोई कठिनाई हो तो वह कठिनाई दूर की जा सके। बच्चे पूर्ण रूप से सीखें हैं या नहीं इसके लिए शिक्षक पाठ की पुनरावृत्ति करें । बच्चों से पाठ संबंधित बातें करें, पूछें एवं यह जानने की कोशिश ही नहीं करें वल्कि अवश्य जानें कि सभी बच्चे सीख गए हैं। नहीं सीख पाये बच्चों की पहचान करें एवं उनका पुनर्बलन करें।

बिहार की स्कूली शिक्षा हेतु एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित नयी पाठ्यपुस्तकें कुछ नया सोचने और करने को तथा खोजने को उत्प्रेरित करती हैं। अतः पाठों के अंत में दिए गये सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर सिर्फ उस पाठ से नहीं खोजे जा सकते वल्कि इन्हें खोजने व उत्तर पाने के लिए कई बार पाठ्यपुस्तक और स्कूल की परिधि से बाहर जाना होगा। पुरानी एवं नयी पाठ्यपुस्तकों में यह एक बड़ा फर्क है। ऐसे में शिक्षक-शिक्षिकाओं को नये नज़रिये के साथ इन पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना-पढ़ाना चाहिए।

शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में प्रत्येक गतिविधि समूह से, पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार, जोड़-घटा सकते हैं। आपने पंचतंत्र का नाम अवश्य सुना होगा। एक राजा को चिंता थी कि उसके राजकुमार पढ़ते नहीं हैं। कई गुरु बुलाये गये परन्तु वे सारे के सारे चंचल राजकुमार के सामने असफल साबित हुए। बाद में पंडित विष्णुशर्मा को बुलाया गया। उन्होंने राजकुमार को पोथियों से नहीं, बल्कि कहानियों से शिक्षा देनी शुरू की। उनके किस्सों में नीरसता नहीं थी और प्रत्येक कहानी के पीछे एक संदेश छिपा होता था। कल तक के उदंड राजकुमार अब इनमें रस लेने लगे और उस योग्यता को हासिल कर सके, जिसकी उनसे उम्मीद थी। इन्हीं कहानियों का संग्रह 'पंचतंत्र' कहलाता है। आज भी ये कहानियाँ बच्चे सुनते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखते हैं। ऐसा कहने का तात्पर्य है कि यह स्थापित हो गया है कि हमारी बुद्धि, हमारे अनुभव एवं सूझ-बूझ के इस्तेमाल करने का प्रतिफल है। कोई भी नई बात हम अपनी पूर्व जानकारी के बाद सीखते हैं। किसी भी वर्ग-कक्ष में बच्चों के सामान्य अनुभव पर आधारित बातचीत के आधार पर ही नयी जानकारी दें तथा ज्ञान के सृजन हेतु माहौल बनायें। बच्चों की सामान्य बुद्धि/अनुभव पर आधारित क्रिया-कलाप, बच्चों के बुद्धि के विकास में सहायक होंगे। हमारा उद्देश्य बच्चों की पढ़ने में अभिरुचि पैदा कराना होना चाहिए। इसलिए शिक्षक अपने बुद्धि-विवेक से इस शिक्षण सहयोग संदर्शिका में सुधार कर सकते हैं।

अतः शिक्षक प्रस्तावित क्रिया-कलाप में से गतिविधि आधारित बच्चों के निर्णय लेने की क्षमता का सम्मान करते हुए पाठ पर अपनी समझदारी के अनुसार जोड़-घटा सकते हैं। प्रत्येक गतिविधि के बाद अपना एवं बच्चों का मूल्याँकन जरूर करें। इसके आधार पर हर पाठ के बाद दी गई तालिका को भरना होगा। यह संदर्शिका केवल एक मार्गदर्शन है। अतः शिक्षकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। राज्य के सभी प्रारंभिक विद्यालयों में विद्यार्थी प्रगति-पत्रक का संधारण सुनिश्चित करने का निर्णय शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा लिया गया है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए कक्षावार-विषयवार पूरे वर्ष में प्रत्येक चार माह पर इस प्रगति-पत्रक को भरना अनिवार्य है। यह प्रगति-पत्रक प्रत्येक बच्चे की शैक्षिक और सह-शैक्षिक उपलब्धियों का दर्पण होगा। अतः इस संदर्शिका में संबद्ध अंश भी दिया जा रहा है। अपेक्षा है कि मूल्यांकन की योजना बनाते समय आप इस प्रगति-पत्रक को अवश्य ध्यान में रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित

अकादमिक संयोजक दल

शिक्षकों के लिए निर्देश

1. बच्चों से बातचीत करें ताकि भयमुक्त वातावरण का निर्माण हो सके एवं बच्चे अपनी बातों को सहज व सरल रूप से बोल सकें।
2. बच्चो को दिये जाने वाले निर्देश स्पष्ट व सरल भाषा में दिये जायें जिससे बच्चे आसानी से उन्हें समझ सकें।
3. उदाहरण दैनिक जीवन व परिवेश से सम्बन्धित हों।
4. विद्यालय–प्रांगण में पायी जाने वाली विभिन्न वस्तुओं का शिक्षण–अधिगम–सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाए।
5. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी सुनिश्चित करें।
6. शिक्षक / शिक्षिका बच्चों की बातों को ध्यानपूर्वक व धैर्यपूर्वक सुनें।
7. बच्चों से केवल सवाल को हल ही ना कराया जाए वल्कि सवाल निर्माण भी कराया जाए।
8. कक्षा में बच्चों की संख्या एवं गतिविधि के आवश्यकतानुसार समूह व समूह में बच्चों की संख्या का निर्धारण किया जाए।
9. अवधारणाओं के विकास हेतु संबंधित चित्रों को बनवायें तथा आवश्यकतानुसार रंग भरवायें।
10. पाठ के उद्देश्यों के अनुरूप ही गतिविधियों का चयन करें।
11. जब बच्चे गतिविधियाँ कर रहें हो तो शिक्षक / शिक्षिका लगातार अवलोकन करते रहें।
12. बच्चों को समूह में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाये जिससे सामूहिक भावना का विकास होगा।
13. बेकार सामग्री की सहायता से शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण करवाया जाए।
14. बच्चे अभी सीखने की प्रक्रिया में हैं और गलतियाँ सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा है। इनके प्रति अधिक कठोर न बनें।
15. बच्चों की गलतियाँ पहचानें व उनका निराकरण करें।
16. समय–समय पर बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए जिससे वे अपने कार्य को करने के लिए अभिप्रेरित हो।
17. कक्षा के सभी बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें।
18. बच्चों को बोलने का अवसर प्रदान करें।
19. परिवेश की वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति पर सामान्य एवं काल्पनिक बातचीत का अवसर प्रदान करें।
20. चित्रों में मौजूद वस्तुओं को शब्दगत आधार दें।
21. गीत को मज़े के साथ गाएं।
22. घटनाओं को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहित करें।
23. समूह गायन का मौका दें।
24. बच्चों के तुकान्त शब्दों के प्रति आकर्षण को रचनात्मक दिशा दें।
25. सुनने के कौशल को विकसित करें।
26. लय में कविता पढ़ने के आनंद को बढ़ावा दें।
27. खेल-खेल में नाटक की कला को बढ़ावा दें।
28. भाषा एवं चित्रों के अंतःसंबंधों का अनुमान लगाएं।
29. शब्दों को सुनकर लिख सकने की क्षमता को विकसित करें।
30. बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति से लिखित अभिव्यक्ति की तरफ बढ़ाएं।

अनुक्रमणिका

कक्षा–II हिन्दी की पाठ्यपुस्तक : अंकुर, भाग–II

पाठ–संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ–संख्या
पाठ – 1	चित्र–पठन	1
पाठ – 2	कौआ और लोमड़ी	2
पाठ – 3	नानी तेरी मोरनी	4
पाठ – 4	प्रभु मेरा जीवन हो सुन्दर	6
पाठ – 5	प्यासा कौआ	8
पाठ – 6	बकरियाँ	10
पाठ – 7	बहुत हुआ	12
पाठ – 8	भालू ने खेली फुटबॉल	14
पाठ – 9	किसान, भालू और आलू	16
पाठ – 10	अगर पेड़ भी चलते होते	18
पाठ – 11	हाँ जी हाँ, ना जी ना	20
पाठ – 12	कितने कौवे	22
पाठ – 13	चूँ–चूँ की टोपी	24
पाठ – 14	मेला	26
पाठ – 15	निशा की चिट्ठी	28
पाठ – 16	होली	30
पाठ – 17	बन्दर और टोपी	32

पाठ - 1 : चित्र-पठन

उद्देश्य

- बच्चों को चित्र पर बात करने का अवसर प्रदान करना।
- परिवेश की वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति पर सामान्य एवं काल्पनिक बातचीत का अवसर प्रदान करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बात करें कि पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र में क्या–क्या दिखायी दे रहा है ? पूछें– कौन क्या कर रहा है ?
- चित्र देखकर वस्तुओं / जंतुओं के नाम खोजने को कहें। वे जो कुछ भी बताएँ उसे बोर्ड पर भी लिख सकते हैं।
- चित्र में जितनी वस्तुएँ हों, उनके फ्लैश–कार्ड बच्चों के साथ मिलकर शिक्षक बना सकते हैं और फिर कक्षा में प्रदर्शित कर सकते हैं।
- इन फ्लैश कार्डों पर बातचीत भी की जा सकती है।
- चित्र में जितनी वस्तुएँ हों, उनके फ्लैश–कार्ड बच्चों के साथ मिलकर शिक्षक बनायें और कक्षा में प्रदर्शित करायें।
- इन फ्लैश–कार्डों के संबंध में बातचीत करें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर चित्र में दिखनेवाली वस्तुओं के नाम बोलने व लिखने को कहें।
- समूह में चित्र से जुड़े शब्दों को वाक्य में प्रयोग करायें।
- बच्चों को समूह में अपने दोस्तों के नाम लिखने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों को चित्र पर दो वाक्य बोलने को प्रोत्साहित करें।
- बच्चों से अन्य चित्र एकत्रित करायें और एकत्रित चित्रों के संबंध में बातचीत करें।
- बच्चों को चित्र बनाने को कहें। चित्र जैसा भी बने, बच्चों को प्रयास करने दें।
- चित्र में रंग भरवायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को पाठ में दिये हुए चित्र से संबंधित शब्द को श्यामपट पर लिखने को कहें।
- बच्चों को परिवेश की वस्तुओं पर बोलने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा	
बच्चों की संख्या, जो वस्तुओं तथा व्यक्तियों के बारे में अपने विचार रख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो अपनी बात पूरे वाक्य में बोल सकते हैं।

पाठ-2 : कौआ और लोमड़ी

उद्देश्य

- बच्चे चित्रों को देखकर चित्र में होने वाली घटनाओं के प्रति अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना।
- घटनाओं के क्रम को समझने की क्षमता विकसित करना।
- कल्पना–शक्ति का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

* बच्चों से कौआ एवं लोमड़ी से जुड़े उनके अनुभवों को सुनें और मुख्य बात को श्यामपट पर लिखें।
* बच्चों से पूछें कि कौआ और लोमड़ी में से कौन ज़्यादा चालाक है ? उनके ऐसा बोलने का कारण भी सुनें।
* शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर नये शब्दों का फ्लैश–कार्ड बनाएँ और कक्षा में प्रदर्शित करें।
* बच्चों की मदद से पाठ के चित्रों को देखकर कहानी बनाने का प्रयास करें।
* बच्चों को कौआ और लोमड़ी के बीच होने वाली बातचीत के आधार पर नाटक करने के लिए प्रोत्साहित करें।
* बच्चों से पूछें कि क्या पशु–पक्षी आपस में बात कर सकते हैं।
* बच्चों से पूछें कि अगर कौआ या लोमड़ी की जगह आप होते तो क्या करते।

समूह–कार्य

- बच्चों को समूह में बैठा दें और हर समूह को अलग–अलग जानवर की तरह बोलने, चलने, दौड़ने, खाने का अभ्यास करने को कहें। प्रत्येक समूह की बारी–बारी से प्रस्तुति करायें और बाकी बच्चे दर्शक के रूप में बैठें।
- बच्चों को समूह में गतिविधि का अवसर प्रदान करें, जैसे–

  समूह 1– अक्षर–कार्ड से शब्द बनाना।

  समूह 2– चार्ट पेपर पर जानवर की तसवीर बनाना।

  समूह 3– दो अलग कहानियों के चित्रों को क्रमबद्ध करना।

  समूह 4– किताब में दिये गये चित्र पर कहानी बनाना और कक्षा में सुनाना।

  समूह 5– बच्चों से मुखौटा बनवाना और कहानी का नाटक–मंचन करवाना।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से बारी–बारी से 'कौआ और लोमड़ी' या अन्य कहानी सुनें।
- चित्र–1, 2 और 3 से जुड़े शब्दों को लिखने को कहें।
- लोमड़ी और कौआ का एक–एक नाम सोचकर बोलने को कहें, जैसे–चीकू लोमड़ी, भोलू कौआ आदि।
- 'लोमड़ी और कौआ' में प्रयोग किये गये अक्षरों को अलग–अलग कर प्रत्येक अक्षर से कोई शब्द बोलने को कहें।
- बच्चों से वर्णमाला लिखवाएँ।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से कहानी या उनसे जुड़ी बातों को सुनें।
- बच्चों से पूछें–उन्हें कहानी कैसी लगी।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा		
बच्चों की संख्या, जो चित्रों से कहानी को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो घटनाओं के क्रम को समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बेझिझक अपने विचारों को बता सकते हैं।

पाठ-3 : नानी तेरी मोरनी

उद्देश्य

* मजे के साथ लय में गाने की क्षमता का विकास करना।
* चित्रों एवं भाषा के अन्तःसंबंधों का अनुमान लगाने की क्षमता का विकास करना।
* कल्पना–शक्ति को विकसित करना।
* अपने विचारों को क्रमवार बोल सकने की क्षमता विकसित करना।
* ई (ी) की मात्रा की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से उनकी नानी के बारे में बात करें। बातचीत में उभरे शब्दों को श्यामपट पर लिखें।
- पाठ में दिये गये चित्र पर बातचीत करें।
- शिक्षक लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़ कर सुनायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उस शब्द को पाठ में खोजने को कहें, जहाँ वह शब्द लिखा हो। पाठ की पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज लगाने को कहें।

समूह–कार्य

* बच्चों को समूह में पहले से सुनी हुए कविता गाने का अभ्यास करने को कहें।
* बच्चों के समूह बनाकर कविता को अलग लय में तैयार करने को कहें। फिर सभी 'समूह' की बारी–बारी से वर्ग में प्रस्तुति करायें।
* समूह में बच्चों को पाठ पढ़ने को कहें।
* समूहवार दो–दो पंक्तियों के अर्थ का अनुमान लगाने को कहें एवं उसे बड़े समूह में सुनाने को कहें।
* समूह में इस गाने का मंचन करायें।
* बच्चों को कक्षा में दादी–नानी का कोई अन्य गीत प्रस्तुत करने को कहें।
* समूह में पुस्तकालय से किताब दें और ई (ी) से जुड़े शब्दों की सूची बनाने कहें। पाठ में 'ई' (ी) से जुड़े शब्दों को चुनें। चुने गये शब्दों की ध्वनि से मिलते समान ध्वनि वाले शब्द लिखवाएँ, जैसे–नानी–रानी, तेरी–मेरी इत्यादि।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ को देखकर मन–ही–मन पढ़े।
- 'ई' (ी) वाले शब्दों को अपनी कॉपी में लिखने को कहें।
- पाठ में से देखकर कोई दो पंक्तियाँ लिखने–को कहें।
- बच्चों से समान ध्वनि वाले शब्द लिखने को कहें, जैसे– नानी, रानी, पानी, मोर, चोर, शोर, रेल, तेल, मेल इत्यादि।

पुनरावृत्ति

* बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
* ई (ी) से जुड़े शब्दों को बच्चों से सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा		
बच्चों की संख्या, जो लय में कविता पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो बिना मात्रा वाले शब्द पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मात्रा (ी) वाले शब्द पढ़ सकते हैं।

पाठ - 4 : प्रभु मेरा जीवन हो सुन्दर

उद्देश्य

- समूह में गीत गाने की क्षमता विकसित करना।
- कल्पना–शक्ति को विकसित करना।
- अपने विचारों को बोल सकने की क्षमता विकसित करना।
- बच्चों के तुकान्त शब्दों के प्रति आकर्षण को रचनात्मक दिशा देना।
- 'उ' (ु) की मात्रा की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें कि आप कौन–कौन सी वस्तुएँ देखते हैं ? जो वस्तुएँ आप देखते हैं, उन्हें बनाने वाले कौन हैं ? आप उनसे क्या–क्या चाहते हैं ?
- शिक्षक लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से सुनें।
- कविता का सरल अर्थ अपने शब्दों में बच्चों को बतायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उस शब्द को पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वह शब्द लिखा हो, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज लगाने को कहें।
- तुकान्त शब्द, जैसे– तन–मन, खाना–जाना इत्यादि शब्दों की सूची बनवाएँ और कक्षा में टाँगें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर कविता को सुनी हुए लय में गाने का अभ्यास करने को कहेंगे।
- कोई अन्य गीत जो उनकी मातृभाषा में हों, उनकी समूह में प्रस्तुति करने को कहें।
- समूह में तुकान्त शब्दों को लिखने दें।
- समूह में पाठ को बच्चों से पढ़ने को कहें।
- समूह में उ (ु) की मात्रावाले शब्दों को चुनवाएँ, चुने शब्दों से वाक्य बनवायें।

व्यक्तिगत–कार्य

* बच्चों से चित्रकारी करायें।
* बच्चों को पेपर के टुकड़े पर कोई अक्षर लिख कर दें और उस अक्षर से शुरू होने वाले पाँच शब्द लिखने को कहें।
* पाठ को देखकर लिखने को कहें।
* बच्चों को ई (ी), उ (ु) वाले शब्द इस पाठ से खोज कर लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर कविता को लय से पढ़ने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा			
बच्चों की संख्या, जो देखकर एक पंक्ति पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय में कविता पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मात्रा वाले शब्द पढ़ सकते हैं (ी, ु)	बच्चों की संख्या, जो देखकर लिख सकते हैं।

पाठ-5 : प्यासा कौआ

उद्देश्य

- चित्रों के आधार पर अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना।
- घटनाओं को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित करना।
- कल्पना–शक्ति का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से कौए से जुड़ी बातें सुनें और श्यामपट पर लिखें और पढ़ें।
- पाठ में दिये गये चित्र पर बात करें और कहानी बनाएँ। शिक्षक कहानी को श्यामपट पर लिखें और पढ़ें।
- लोमड़ी और कौआ पाठ वाले कौआ के बारे में पूछें। बच्चों से पूछें कि वे कैसे कह सकते हैं कि कौवे चालाक होते हैं? कौन अधिक चालाक लगता है कौआ या लोमड़ी ?
- पाठ के चार चित्रों के आधार पर कहानी सुनायें।
- बच्चों को भी अपनी भाषा में कहानी सुनाने को कहें।
- बच्चों से सोचने एवं बताने को कहें कि कहानी वाले घड़े में पानी कैसे आया होगा ? बच्चों की बात सुनें।
- पानी पीने के बाद कौआ उड़ गया। उसके बाद क्या हुआ होगा–बच्चों से पूछे।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनायें। उनसे चार चित्रों को देखकर कहानी बनाने (मौखिक) के लिए कहें। वर्ग में समूहवार सुनाने को कहें।
- एक घड़े में आधी ऊँचाई तक पानी भर दें। बारी–बारी से एक–एक समूह को घड़े में कंकड़ डालने का मौका दें। पानी की बढ़नेवाली ऊँचाई पर बच्चों से समूह में बात करें।
- बात करें, क्या एकदम कम पानी होने पर भी पानी ऊपर आ सकेगा ? घड़े का पानी कम करके तब कंकड़ डालकर देखें।
- अभ्यास में दी गयी कहानी का समूह में बातचीत कर पूरा करने को कहें। पूरी कहानी सभी समूह को बारी–बारी से सुनाने के लिए कहें।
- शब्दों की अंत्याक्षरी खेलवाएँ।
- पाठ के अभ्यास में दिये गये रिक्त स्थानों को भरने के बाद प्रत्येक वाक्य के चार सेट फ्लैश–कार्ड तैयार करें। इन कार्डों को मिश्रित कर एक–एक बंडल बना लें। प्रत्येक समूह को एक–एक बंडल दे दें तथा कार्ड को कहानी के अनुसार सजाने को कहें।
- दो बच्चों के बीच एक सेट के आधे कार्ड दें तथा मिलकर कहानी बनाने को कहें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से घड़े का चित्र बनाने को कहें एवं उसके घरेलू उपयोग पर बातचीत करें।
- बच्चों से कहानी में दिखनेवाली वस्तुओं के नाम लिखने को कहें।
- बच्चों से वर्णमाला और बारहखड़ी लिखवायें और देखें किसके अक्षर साफ नहीं हैं। उसे सहयोग दें कि वह साफ–साफ लिखें।
- बच्चों को शब्दों के फ्लैश–कार्ड देकर कॉपी में उतारने को कहें।

पुनरावृत्ति कार्य

- बच्चों से पाठ की कहानी सुनें।
- बच्चों से कोई और कहानी सुनें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो चित्र पर आधारित कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर सीधे मौखिक उत्तर दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पढ़ाये गये पाठ को अपने शब्दों में सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों को सही–सही देखकर उतार सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मात्रावाले (ी, ु) शब्द पढ़ सकते हैं।

पाठ-6 : बकरियाँ

उद्देश्य

- घटनाओं के क्रम को समझ सकने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी सुनाने की क्षमता को विकसित करना।
- ऊ (ू) मात्रा वाले शब्द पढ़ने एवं लिखने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों से छोटे वाक्य लिखने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बकरी से जुड़ी बातें, सुनें और श्यामपट पर लिखें।
- संक्षेप में पाठ को हाव–भाव के साथ सुनाएँ।
- कहानी के आधार पर नाले की लम्बाई और चौड़ाई के बारे में बातचीत करें और अंदाज लगाने को कहें।
- बात करें कि बकरियाँ नाले में कूद कर उस पार क्यों नहीं गयी होंगी ?
- कठिन शब्दों को एक–एक कर श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को पाठ में खोजने को कहें। जहाँ ये शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज लगाने को कहें। उन्हें शब्दों के अर्थ बताएँ।
- कहानी को बच्चों से क्रमवार पढ़वाएँ। एक बच्चा जोर से पढ़े और बाकी बच्चे भी उँगली रख कर मन में पढ़ें। बारी–बारी से सभी बच्चों को पढ़ने का मौका दें।
- कहानी में दिये गये सवालों का मौखिक जवाब पूछें।
- बच्चों से पूछें बकरियाँ नाले को पार कर कहाँ गई होंगी? सोंच कर बतायें।

समूह–कार्य

* बच्चों के समूह बनायें और उनसे बात करने को कहें कि बकरियों की जगह वे होते तो कैसे पुल पार करते ?
* बच्चों को समूह में बात करने को कहें कि नाले पर और कैसे–कैसे पुल बन सकते हैं ? अनुमान से तरह–तरह के पुलों के चित्र बनवायें।
* समूह में बात करने को कहें कि नाले को पार करने के कौन–कौन से तरीके हो सकते हैं ?
* अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत कर हल करने को कहें।
* पाठ को देखकर कोई दो पंक्तियाँ कॉपी में लिखने को कहें।
* समूह में बच्चों को पुस्तकालय से कहानी की किताब पढ़ने को दें।
* समूह में बच्चों से पाठ में दिये गये ऊ (ू) मात्रा वाले शब्दों की सूची बनाने को कहें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बारी–बारी से बच्चों को पाठ की चार पंक्तियाँ हाव–भाव के साथ बोलकर पढ़ने को कहें।
- पढ़े गये पाठ से 5 शब्द लिखवायें तथा उन्हें बच्चों को खुद जाँचने को दें। बाद में हर एक शब्द से एक–एक वाक्य बनवायें तथा उसे जाँचें।
- किसी भी जानवर पर दो वाक्य लिखने को कहें। प्रत्येक बच्चे से अपना वाक्य पढ़कर सुनाने को कहें।
- बच्चों से जानवरों की आवाज एवं रंग के बारे में बताने को कहें।

पुनरावृत्ति

- कम बोलनेवाले बच्चों से संक्षेप में कहानी सुनाने को कहें।
- बच्चों को अपनी पसंद के जानवर का नाम बताने एवं उसके बारे में कुछ वाक्य बोलने के लिए कहें।
- बच्चों से मात्रा (ी, ु, ू) वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा				
बच्चों की संख्या, जो मात्रा (ी, ु, ू) वाले शब्द पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चित्र को देखकर उस पर बातचीत कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में दो पंक्तियाँ बोल सकते हैं।

पाठ-7 : बहुत हुआ

उद्देश्य

- कविता को पढ़कर समझ विकसित करना।
- भाषा एवं चित्र के अन्तःसंबंधों का अनुमान लगाने की क्षमता का विकास करना।
- 'आ' (ा) की मात्रा की समझ विकसित कर सकना।
- लय में कविता सुनाने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों से वाक्य बना सकने की क्षमता का विकास करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बारिश से होनेवाली परेशानियों पर बात करें। बच्चों द्वारा बतायी गयी बातें शिक्षक श्यामपट पर लिखें।
- बच्चों से पूछें कि ऐसे में वे बादल से क्या कहना चाहेंगे ?
- पाठ में दिये गये चित्र पर बात करें।
- शिक्षक लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़कर सुनाएँ।
- कविता का सरल अर्थ बच्चों को बताएँ।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें। बच्चों को अंदाज लगाने को कहें।
- बच्चों से बात करें कि पिंजरे में बैठा–बैठा कोई भी पशु या पक्षी कैसा महसूस करता है? बच्चों द्वारा बतायी गयी बातों को श्यामपट पर लिखें और पढ़ें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर कविता को लय में गाने का अभ्यास करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह को लय में कविता सुनाने के लिए कहें।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत कर हल करने को कहें।
- बारिश के समय पाये जाने वाले जानवरों के नामों की सूची बनवायें।
- बच्चों से समूह में उन बच्चों के नाम लिखने को कहें, जिन्हें बारिश पसंद है और जिन्हें नहीं है।
- बारिश से संबंधित गीत सुनाने को कहें।
- पाठ में आये 'आ' (ा) की मात्रावाले शब्दों को चुनवायें। चुने गये शब्दों से वाक्य बनवायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ को देखकर मन-ही-मन पढ़ने को कहें।
- पाठ को देखकर बोल-बोलकर पढ़ने को कहें।
- पाठ को देखकर दो पंक्तियाँ लिखने को कहें।
- पढ़े गये पाठ से 5 शब्द लिखवायें, उन्हें बच्चों को खुद जाँचने को दें। बाद में हर एक शब्द से एक वाक्य बनवायें तथा उसे जाँचें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर कविता की कुछ पंक्तियों को लय से पढ़ने को कहें।
- बच्चों को शब्द देकर वाक्य बनाने को कहें।।

कितने बच्चों ने क्या-क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो पाठ के दौरान वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में बोल सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मात्रा (ी, ु, ू, ा) वाले शब्द पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के चित्र को देखकर उसपर बातचीत कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पढ़ाये गये पाठ को अपने शब्दों में बता सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों से वाक्य बना सकते हैं।

पाठ-8 : भालू ने खेली फुटबॉल

उद्देश्य

- कहानी को पढ़कर समझने की क्षमता विकसित करना।
- 'ऐ' (ै) और 'औ' (ौ) मात्राओं की समझ विकसित करना।
- सुनकर शब्दों को लिखने की क्षमता का विकास करना।
- देखकर पाँच वाक्य साफ–साफ लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- याद्दाश्त से कहानी सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों से वाक्य बना सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से शेर और भालू से जुड़ी बातें, जो वे जानते हैं उन्हें सुनें और मुख्य बातचीत को श्यामपट पर लिखें।
- शिक्षक संक्षेप में पाठ को हाव–भाव के साथ सुनायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ पाठ को पढ़कर सुनायें। बच्चों से भी पाठ पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।
- नये शब्दों के फ्लैश–कार्ड बनाकर कक्षा में लगायें और रोज बच्चों से पढ़वायें।
- बच्चों से खेलों की सूची बनवायें तथा कक्षा में प्रदर्शित करें। किसी एक खेल के नियम पर चर्चा करें।

समूह–कार्य

- बच्चों को समूह में बात करने को कहें कि और क्या हो जाता अगर शेर और शेरनी भी आस–पास ही होते। घूम–घूमकर समूह–चर्चा सुनें।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत कर हल करने को कहें। शिक्षक घूम–घूम कर इसे जाँचते जाएँ।
- पाठ में ऐ (ै) और औ (ौ) की मात्रावाले शब्दों को चुनवाएँ और उनसे–मिलते जुलते अन्य शब्द ढूँढवाएँ।
- बच्चों में प्रचलित आंचलिक खेलों (क्षेत्रीय) की सूची बनवाएँ। किसी एक खेल के नियम पर चर्चा करें एवं खेलवाएँ।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों से कहानी को मन-ही-मन पढ़ने को कहें।
- कहानी को बोल-बोलकर पढ़ने के लिए कहें।
- बच्चों को बारी-बारी से पाठ की चार पंक्तियाँ हाव-भाव के साथ बोलकर पढ़ने को कहें।
- बच्चों से पाठ को देखकर कोई पाँच पंक्तियाँ कॉपी में लिखने को कहें।
- पढ़े गये पाठ से पाँच शब्द लिखवाएँ और उन्हें बच्चों को खुद जाँचने को दें। बाद में हर एक शब्द से एक वाक्य बनवाएँ तथा उसे जाँचें।
- मात्रावाले शब्दों को लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से संक्षेप में कहानी सुनाने के लिए आग्रह करें।
- बच्चों से मात्रा वाले शब्द पूछें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा					
बच्चों की संख्या, जो सुनकर शब्दों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों से एक वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान चित्र को देखकर उस पर बातचीत कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या जो मात्रा (ि, ु, ू, ा, ै, ो) वाले शब्द लिख/पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ़–साफ़ 3–4 पंक्तियाँ लिख सकते हैं।

पाठ - 9 : किसान, भालू और आलू

उद्देश्य

- बच्चों में निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना।
- अपने विचारों को सिलसिलेवार तरीके से सुना सकने की क्षमता का विकास करना।
- देखकर पंक्तियों को साफ़–साफ़ लिख सकने की क्षमता का विकास करना।
- याद्दाश्त से कहानी सुना सकने की क्षमता का विकास करना।
- बच्चों में कहानी पढ़कर समझ सकने की क्षमता का विकास करना।
- मात्राओं की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से आलू की खेती के बारे में बात करें। उनसे पूछें कि आलू की खेती कब होती है ? इसकी खेती में क्या–क्या करना पड़ता है ?
- शिक्षक पाठ को पढ़ें और बच्चों से पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक कर बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वो शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ से खोजने को कहे कि पाठ में वह शब्द कहाँ है ? शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।
- बच्चों के विचार से किसान ने क्या किया और क्यों? तथा भालू को कुछ नहीं मिला तो क्यों ? इसे श्यामपट पर लिखें और पढ़ें।
- बच्चों से पूछें कि भालू ऐसा क्या करता कि किसान उसे भी आधा आलू दे देता।

समूह–कार्य

- किस फसल के कौन से भाग को खाया जाता है समूह में बच्चों से सूची बनवायें।
- बच्चों को समूह में बात करने को कहें कि किसान दूसरी बार और कौन–कौन सी फसल लगा सकता था जिससे किसान को फ़ायदा हो सकता था ? बड़े समूह में सुनाने को कहें।
- समूह में गाँव में होने वाले फसलों की सूची बनवायें और हर फसल के सामने उस बच्चे का नाम लिखवायें जिसके खेत पर फसल होती है।
- किताब के अभ्यास को आपस में बातचीत कर हल करने को कहें।
- पाठ में आए विभिन्न मात्राओं की सूची उनके परिवार के अनुसार बनवाएँ, जैसे–आ 'ा' मात्रा वाले सभी शब्द एक साथ रहेंगे। यदि एक शब्द में एक से अधिक मात्रायें हैं तो वह शब्द सभी मात्रा–परिवार के साथ रहेगा, जैसे–आलू, आ 'ा' और ऊ (ू) दोनों मात्रा परिवार में रहेंगे। समूह कार्य करा कर कक्षा में प्रदर्शित करायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से कहानी को मन-ही-मन पढ़ने के लिए कहें।
- बच्चों से बारी-बारी से पूरे पाठ को हाव-भाव के साथ बोलकर पढ़ने के लिए कहें।
- बच्चों से पाठ को देखकर पाँच पंक्तियाँ कॉपी में लिखने के लिए कहें।

- पढ़े गये पाठ से पाँच शब्द लिखवाएँ और उन्हें बच्चों को आपस में कॉपियाँ बदलकर जाँचने को कहें। बाद में हर एक शब्द से एक वाक्य बनवायें तथा उसे जाँचें।
- कहानी को आगे बढ़ाने को कहें ताकि भालू को पैदावार का आधा हिस्सा मिल सके।
- जानवरों/फसलों के नामों की सूची बनवायें।
- किताब के अभ्यास को हल करायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से संक्षेप में कहानी सुनाने को कहें।
- बच्चों को शब्द देकर वाक्य बनवाएँ।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में बोल सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो वाक्यों को पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सुनकर शब्दों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दिये गये शब्दों से वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो याददाश्त से कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मात्रा (ि, ु, ृ, ा, ै, ौ) वाले शब्द समझ कर लिख/पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर साफ–साफ पंक्तियों को लिख सकते हैं।

पाठ-10 : अगर पेड़ भी चलते होते

उद्देश्य

- कल्पना–शक्ति का विकास करना।
- शब्दों को सुनकर लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- बच्चों के तुकान्त शब्दों के प्रति आकर्षण को रचनात्मक दिशा देना।
- अक्षरों और शब्दों के उच्चारण करने की समझ विकसित करना।
- ए (े) मात्रा की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बात करें, अगर पेड़ भी चलने लगते तो क्या होता ? बातचीत को खुद या बच्चों की सहायता से श्यामपट पर लिखें।
- कविता का सरल अर्थ बच्चों को बताएँ।
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़कर सुनाएँ और बच्चों से सुनें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वो शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने के लिए कहें।
- कविता को और आगे बढ़ाएँ और बच्चों की बात/इच्छा को लिखें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर कविता को लय में गाने का अभ्यास करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह से लय में कविता सुनें।
- बच्चों को समूह में बात करके बताने को कहें कि अगर पेड़ भी चलते होते तो क्या लाभ होता ?
- बच्चों को समूह में बात करके बताने को कहें कि अगर पेड़ भी चलते होते तो क्या हानि होती ?
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत कर हल करने को कहें। शिक्षक घूम–घूम कर इसे जाँचते जायें।
- शब्द अंत्याक्षरी समूह में खेलवाएँ ।
- समूह में सोचें और बताएँ कि अगर पेड़ पर मिठाई/चॉकलेट इत्यादि उगते तो क्या होता ?
- ए (` ) की मात्रा वाले शब्दों की सूची बनाएँ। इन शब्दों में ए ( `) मात्रा के अलावे और कौन–कौन सी मात्राएँ आई हैं, उन्हें लिखें।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ को देखकर मन-ही-मन पढ़ने के लिए कहें।
- समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखने के लिए कहें।
- पाठ को देखकर लिखने के लिए कहें।
- पढ़े गये पाठ से पाँच शब्द लिखवाएँ। उन्हें बच्चों को खुद जाँचने को दें। बाद में हर एक शब्द से एक वाक्य बनवायें तथा उसे जाँचें।
- पाठ के अभ्यास को हल करवायें एवं जाँच करें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ की चार–चार पंक्तियाँ लय के साथ पढ़ने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो पाठ देखकर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी शब्द से वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय में कविता पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय में कविता को पूरा या अधूरा सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर मौखिक उत्तर दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो मात्रा (ी, ु, ू, ा, ै, ौ, ो) वाले शब्द समझ कर लिख/पढ़ सकते हैं।

पाठ-11 : हाँ जी हाँ, ना जी ना

उद्देश्य

- चित्रों एवं भाषा के अन्तःसंबंधों का अनुमान लगाने की क्षमता विकसित करना।
- कल्पना–शक्ति का विकास करना।
- शब्दों को सुनकर लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- लय के साथ कविता पढ़ने की क्षमता का विकास करना।
- बच्चे पाठ समझ सकें, ऐसी क्षमता विकसित करना।
- चंद्रबिन्दु (ँ) की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बात करें– 'हाँ जी' कब बोलते हैं और 'ना जी' कब बोलते हैं ?
- शिक्षक मानक उच्चारण, लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़कर सुनाएँ।
- कविता का सरल अर्थ बच्चों को बताएँ।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।
- मात्रावाले शब्दों की पुनरावृति कराएँ।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर कविता को लय में गाने का अभ्यास करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह के बच्चों द्वारा समूह–गान के रूप में कविता सुनाने को कहें।
- बच्चों को समूह में बात करने, लिखने को कहें कि बच्चे किस–किस काम के लिए 'ना' करते हैं? शिक्षक सभी बच्चों को चर्चा में भाग लेने हेतु प्रेरित करें तथा लिखे हुए को जाँचें।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूहों में बातचीत कर हल करने को कहें। शिक्षक आवश्यकतानुसार बच्चों की मदद करें।
- पाठ में आए चंद्रबिन्दु (ँ) वाले शब्दों की सूची बनाएँ और इसे वर्ग में पढ़कर सुनाएँ।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ को बोलकर पढ़ने को कहें।
- पाठ को देखकर मन-ही-मन पढ़ने को कहें।
- अर्थ समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखने को कहें।
- पाठ की पंक्तियों को साफ़-साफ़ लिखने को कहें।
- पढ़े गये पाठ से पाँच शब्द लिखवायें। उन्हें बच्चों को खुद जाँचने को दें। बाद में हर एक शब्द से एक वाक्य बनवायें तथा उसे जाँचें।
- बच्चों से मात्रावाले शब्द लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- शर्मीले बच्चों को सामने बुलाकर पाठ की चार–चार पंक्तियों को लय के साथ पढ़ने के लिए कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा								
बच्चों की संख्या, जो पाठ देखकर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी शब्द से एक वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय में कविता पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो याददाश्त से लय में कविता को पूरा या अधूरा सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर मौखिक उत्तर दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पढ़े गए पाठ के बारे में जानते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर दो पंक्तियाँ साफ–साफ लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चंद्रबिन्दु वाले शब्द समझ कर लिख/पढ़ सकते हैं।

पाठ - 12 : कितने कौवे

उद्देश्य

- कल्पना–शक्ति का विकास करना।
- अपने विचारों को सिलसिलेवार तरीके से सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को पढ़ और लिख सकने की क्षमता विकसित करना (क्ष, त्र, ज्ञ)।
- अनुस्वार (ं) की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से शिक्षक पूछें कि उनके गाँव में कितने कौवे होंगे। उनसे पूछें–उन्हें कैसे गिना जा सकता है ? जो भी जवाब आए उसे श्यामपट पर लिख दें और बच्चों से पढ़वाएँ।
- पाठ में दिये गये चित्र के बारे में बात करें।
- पहले से पाठ पढ़कर शिक्षक संक्षेप में पाठ को हावभाव के साथ सुनायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।
- संयुक्ताक्षर से बनने वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखें और पढ़वायें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनायें, उन्हें आपस में बात करने कहें कि कौओं को गिनना क्यों मुश्किल है ? शिक्षक बच्चों की बात ध्यान से सुनें।
- समूह में चार्ट–पेपर दें और ऊपर लिख दें 'गुस्सा आता है जब.....' और हर बच्चे को इसके आगे की पंक्ति/शब्द को लिखने को कहें।
- बच्चों से पाठ्यपुस्तक से उन शब्दों की सूची बनवायें जिनमें संयुक्ताक्षर वाले शब्द हों। इन शब्दों से वाक्य बनवायें।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत कर हल करने को कहें। शिक्षक घूम–घूम कर इसे जाँचते जायें।
- पाठ में आये अनुस्वार (ं) युक्त शब्दों को छाँटकर सूची बनायें। ऐसे और शब्द यदि जानते हों तो उन्हें लिखवाने एवं पढ़वाने का कार्य करें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से कहानी को मन में पढ़ने के लिए कहें।
- बच्चों से बारी–बारी से पाठ की चार पंक्तियाँ हाव–भाव के साथ बोलकर पढ़ने के लिए कहें।
- पाठ को देखकर बच्चों से पंक्तियों को कॉपी में लिखने के लिए कहें।
- पढ़े गये पाठ से पाँच शब्द लिखवायें। उन्हें बच्चों को खुद जाँचने को दें। बाद में हर एक शब्द से एक वाक्य बनवाएँ तथा उसे जाँचें।
- संयुक्ताक्षर वाले शब्दों की सूची बनायें।
- पुस्तक में दिये गये अभ्यास को करायें।

पुनरावृत्ति

- कम बोलने वाले बच्चों से संक्षेप में कहानी सुनाने को कहें।
- बच्चों से संयुक्ताक्षर वाले शब्द बताने को कहें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो पाठ पढ़ कर सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ से शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो याददाश्त से कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो संयुक्ताक्षरों (क्ष, त्र, ज्ञ) को पढ़ और लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो चंद्रबिन्दु एवं अनुस्वार वाले शब्दों को समझ कर पढ़/लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर दो पंक्तियाँ साफ–साफ लिख सकते हैं।

पाठ - 13 : चूँ-चूँ की टोपी

उद्देश्य

- पाठ को पढ़कर समझने की क्षमता उत्पन्न करना।
- कल्पना–शक्ति का विकास करना।
- अपने विचारों को सिलसिलेवार तरीके से सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- हाव–भाव के साथ संवाद बोलने की समझ विकसित करना।
- खेल–खेल में नाटक की कला को बढ़ावा देना।
- संयुक्ताक्षर वाले शब्दों की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से पूछें कि क्या चूहे ने उनका कोई नुकसान किया है ? उनके द्वारा बताये जा रहे नुकसान को श्यामपट पर लिखें।
- पहले से पाठ पढ़ कर शिक्षक संक्षेप में पाठ को हाव–भाव के साथ सुनायें।
- शिक्षक शुद्ध उच्चारण एवं हाव–भाव से पाठ को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक कर बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।
- संयुक्ताक्षरों की सूची बनवायें।

समूह–कार्य

- बच्चों से समूह में टोपी बनवायें और सजवायें। तरह–तरह की टोपियाँ बनवायें और कक्षा में प्रदर्शित करें।
- नाटक के संवाद को बोलने का अभ्यास समूह में करवाएँ और पूरे नाटक का मंचन करायें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से नाटक को जोर–जोर से पढ़ने को कहें।
- पाठ को देखकर बच्चों से पंक्तियों को कॉपी में लिखने को कहें।
- चूहे का चित्र बनवाएँ।
- पढ़े गए पाठ से पाँच शब्द लिखवायें और उन्हें बच्चों को खुद जाँचने को दें। बाद में हर एक शब्द से एक वाक्य बनवायें तथा उसे जाँचें।
- अभ्यास के प्रश्नों को हल करवायें।
- 'संयुक्ताक्षर' वाले शब्दों की सूची बनवायें, जैसे– ज्ञानी, अज्ञान, क्षत्रिय, क्षमा, त्रिशूल इत्यादि।
- चार पक्षियों और चार जानवरों के नाम, वे कहाँ रहते हैं, क्या खाते हैं, क्या आवाज़ निकालते हैं, को बोलने/लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- कम बोलने वाले बच्चों से संवाद बोलने को कहें।
- कुछ बच्चों से नाटक के किसी एक चरित्र का संवाद पढ़वायें।

- कुछ बच्चों को कथा–वस्तु को संक्षेप में सुनाने का मौका दें।
- बच्चों से संयुक्ताक्षरों वाले शब्दों की पहचान एवं उनसे बननेवाले शब्द लिखवायें

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा								
बच्चों की संख्या, जो मात्रा वाले शब्द समझ कर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ की वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में बोल सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के संवाद को पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सुनकर शब्दों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो याददाश्त से कथा–वस्तु को सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर सीधे प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान चित्र को देखकर उसपर बातचीत कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर पंक्तियाँ साफ–साफ लिख सकते हैं।

पाठ - 14 : मेला

उद्देश्य

- किसी वस्तु के बारे में बोल कर लिख सकने की क्षमता विकसित करना।
- अपने विचारों को सिलसिलेवार तरीके से सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों को सुनकर लिख सकने तथा शब्दों से वाक्य बना सकने की समझ विकसित करना।
- कविता को लय के साथ समझकर पढ़ कर सुना सकने की क्षमता उत्पन्न करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से मेले का अनुभव सुनें। उनसे पूछें–मेले में क्या मिलता है, उन्हें मेले में क्या–क्या अच्छा लगता है, इत्यादि। बातचीत को लिखें और बच्चों से लिखवायें।
- शिक्षक लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़कर सुनायें और बच्चों से पढ़वायें।
- कविता का सरल अर्थ अपनी याद्दाश्त से बच्चों को बतायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर कविता को लय में गाने का अभ्यास करने को कहें। बारी–बारी से प्रत्येक समूह से लय में कविता सुनें।
- बच्चों के समूह में बात करके मेले में मिलने वाली वस्तुओं की सूची बनाने को कहें। शिक्षक घूम–घूम कर बच्चों की सूची को देखें। शब्दों को सुधारें। मेले में मिलने वाली वस्तुओं के चित्र बनवायें, जैसे– गुब्बारे, खिलौने, मिठाई इत्यादि।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत करके हल करने को कहें। शिक्षक बारी–बारी से आवश्यकतानुसार समूहों को सहयोग करें।

व्यक्तिगत–कार्य

- पाठ को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- पाठ को बोलकर पढ़ने को कहें।
- समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों को देखकर लिखने को कहें एवं जाँचें। इन शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।
- पुस्तक में दिये गये अभ्यास को करायें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को सामने बुलाकर पाठ की चार–चार पंक्तियाँ लय के साथ पढ़ने के लिए कहें।
- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- बच्चों से पाठ से एवं मेले से जुड़े अनुभवों से संबंधित प्रश्न पूछें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा							
बच्चों की संख्या, जो दिये गये शब्दों से वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो सुनकर शब्दों को लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय में कविता पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो याददाश्त से लय में कविता सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर सीधे प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के चित्र को देखकर उसपर बातचीत कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पढ़ाये गये पाठ के बारे में जानते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर पंक्तियाँ साफ–साफ लिख सकते हैं।

पाठ - 15 : निशा की चिट्ठी

उद्देश्य

- अपने विचारों को सिलसिलेवार तरीके से सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को सुनकर लिख सकने की समझ विकसित करना।
- देखकर दो पंक्तियाँ साफ़–साफ़ लिख सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से शिक्षक पूछें कि क्या उन्होंने कभी चिट्ठी देखी है? उनसे पूछें–चिट्ठी कब लिखी जाती है ?
- बात करें कि चिट्ठी लिखने से क्या–क्या फ़ायदे हैं।
- उनसे बात करें कि निशा ने चिट्ठी क्यों लिखी।
- शिक्षक हाव–भाव से पत्र को पढ़कर सुनायें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके श्यामपट पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।

समूह–कार्य

- बच्चों को समूह में बात करने को कहें कि वे किसको चिट्ठी लिखना चाहते हैं तथा उस चिट्ठी में क्या–क्या लिखेंगे। घूम–घूम कर समूह की चर्चा सुनें। फिर समूह में एक चिट्ठी लिखवाएँ। छोटी सी–चिट्ठी नानी, दादी, दीदी या किसी और के नाम हो सकती है, और समूह के सभी बच्चे उस चिट्ठी में एक वाक्य लिखें। चिट्ठी को कक्षा में प्रदर्शित करें।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत करके हल करने को कहें। शिक्षक कक्षा में घूम–घूम कर इसे जाँचते जाएँ।
- बाद में सभी बच्चों को एक–एक चिट्ठी लिखने को कहें।

व्यक्तिगत–कार्य

- बच्चों से पत्र को मन–ही–मन पढ़ने को कहें।
- बच्चों को पत्र बोलकर पढ़ने को कहें।
- बच्चों से पूछे–पत्र में क्या लिखा गया है।
- कठिन शब्दों के अर्थ बतायें एवं उनसे वाक्य बनवायें।
- बच्चों से उनके माता या पिता के नाम चिट्ठी लिखवायें। उसमें लिखा हो कि विद्यालय में आज उन्होंने क्या किया। हो सकता है बच्चे गलत लिखें। इसपर शिक्षक बच्चों को हतोत्साहित न करें, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित करें और लिखने को कहें। बार–बार लिखने से बच्चे सीख जाते हैं।
- संयुक्ताक्षरों को किताब से खोजकर लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से चिट्ठी की बात संक्षेप में सुनाने के लिए कहें।
- पाठ में दी गयी चिट्ठी के बारे में बात करें तथा पता करें अलग–अलग परिस्थितियों में बच्चे अपनी चिट्ठी में क्या लिखेंगे।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा							
बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान वस्तुओं एवं व्यक्तियों के बारे में बोल सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान संयुक्त–अक्षरों से बने वाक्यों को देखकर पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान संयुक्त–अक्षरों से बने शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो किसी दूसरे व्यक्ति को कम–से–कम दो सूचनाएँ मौखिक दे सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर सीधे प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान चिट्ठी का मतलब समझ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर 4–5 पंक्तियाँ साफ–साफ लिख सकते हैं।

पाठ - 16 : होली

उद्देश्य

- अपने विचारों को सिलसिलेवार तरीके से सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- शब्दों को सुनकर लिख सकने की समझ विकसित करना।
- देखकर 4–5 पंक्तियाँ साफ–साफ लिखने की क्षमता का विकास करना।
- कविता को लय के साथ सुना सकने और पढ़ सकने, समझ सकने तथा समझा सकने की समझ विकसित करना।
- 'ड़' एवं 'ढ़' वाले शब्दों की समझ विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से होली के अनुभव सुनें। उनसे पूछें–होली में क्या होता है। वे होली में क्या–क्या करते हैं ? इत्यादि।
- शिक्षक लय एवं हाव–भाव से कविता को पढ़कर सुनाएँ और बच्चों से भी सुनें।
- कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखे हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ लगाने को कहें। उन्हें शब्दों के अर्थ श्यामपट पर लिखकर बताएँ। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनाकर उन्हें कविता को लय में गाने का अभ्यास करने को कहें। प्रत्येक समूह में जाकर लय में कविता सुनें।
- बच्चों के समूह में बात करके होली में जो कुछ भी होता है, उसे लिखने को कहें। शिक्षक सभी समूह में घूम–घूम कर बच्चों के काम को देखें।
- बच्चों के समूह बनायें। समूहों से कविता की चार–चार पंक्तियों को नये लय में तैयार करने को कहें। प्रत्येक समूह से नये लय में कविता की पंक्तियाँ सुनें।
- बच्चों के समूह बनवायें। उन्हें होली में क्या–क्या अच्छा लगता है ? इस पर बात करके लिखने को कहें। शिक्षक आवश्यकतानुसार मदद करें।
- अभ्यास के प्रश्नों को समूह में बातचीत कर हल करने को कहें। इसें जाँचे।
- होली पर अगर कोई गीत आता हो तो गाने को कहें।

व्यक्तिगत–कार्य

- समझ में नहीं आने वाले शब्दों को लिखने को कहें।
- कठिन शब्दों के अर्थ श्यामपट से देखकर लिखें।
- कठिन शब्दों से वाक्य बनवायें।
- उनको होली में क्या–क्या करने का मन करता है। लिखने को कहें।
- पुस्तक के अभ्यास करायें और नये अभ्यास बनाकर बच्चों को करने को दें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों से समवेत स्वर में कविता सुनें।
- बच्चों को सामने बुलाकर पाठ की चार–चार पंक्तियाँ लय के साथ पढ़ने का आग्रह करें।
- बच्चों से ड़ एवं ढ़ से बननेवाले शब्दों की पहचान करवायें। इनसे बनने वाले शब्द पूछें और लिखवायें।

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा							
बच्चों की संख्या, जो पाठ पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो दिये गये शब्दों से वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो लय में कविता पढ़ सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो याददाश्त से लय में कविता सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर सीधे प्रश्नों का उत्तर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान चित्र को देखकर उसपर बातचीत कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर 4–5 पंक्तियाँ साफ–साफ लिख सकते हैं।

पाठ - 17 : बन्दर और टोपी

उद्देश्य

- बच्चों में चित्र की भाषा को समझ सकने की क्षमता विकसित करना।
- कल्पना–शक्ति का विकास करना।
- अपने विचारों को सिलसिलेवार तरीके से सुना सकने की क्षमता विकसित करना।
- सुनकर शब्दों को लिख सकने की क्षमता विकसित कर सकना।
- देखकर दो पंक्तियाँ साफ़–साफ़ लिख सकने की क्षमता का विकास करना।
- कहानी को सुना सकने, पढ़ सकने, समझ सकने तथा समझा सकने की क्षमता विकसित करना।

शिक्षण–निर्देश

- बच्चों से बात करें कि बन्दर के बारे में वे क्या–क्या जानते हैं।
- पाठ में दिये गये चित्र पर बात करें।
- पाठ पढ़ाने से पहले शिक्षक बच्चों को पाठ्यपुस्तक में दिये गये सात चित्रों को देखकर एक कहानी बनाने को कहें।
- पहले से पाठ पढ़कर शिक्षक संक्षेप में पाठ को हाव–भाव के साथ चित्र की मदद लेते हुए सुनायें।
- शिक्षक मानक उच्चारण एवं हाव–भाव के साथ पाठ को पढ़कर सुनायें।
- बच्चों के द्वारा चुने गए कठिन शब्दों को एक–एक करके बोर्ड पर लिखें। बच्चों को उन शब्दों को उस पाठ में खोजने को कहें। जहाँ वे शब्द लिखें हों, उस पंक्ति को शिक्षक पढ़ें और बच्चों को अंदाज़ लगाने को कहें। शब्दों से वाक्य बनाने को कहें।

समूह–कार्य

- बच्चों के समूह बनायें उनसे बन्दर के बारे में लिखने को कहें। प्रत्येक समूह में जाकर बच्चों की बात सुनें।
- बच्चों के समूह बनायें। दिये गये सातो चित्रों को देखकर प्रत्येक चित्र की घटनाओं पर एक–एक वाक्य लिखने को कहें जिससे कहानी पूरी हो जाए। जैसे पहले चित्र को देखकर लिखेंगे ''एक टोपीवाला था।'' शिक्षक समूह में चल रहे काम को देखें।
- बच्चों के समूह बनायें और उनसे बात करने को कहें कि टोपी वाले का पोता क्या करेगा कि उसकी टोपियाँ वापस मिल जाएँगी। शिक्षक घूम–घूमकर समूह की बातचीत को आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे।
- समूह बनाकर बच्चों से अखबार से अथवा रद्दी कागज से टोपियाँ बनाने को कहें।

व्यक्तिगत कार्य

- बच्चों से कहानी को मन-ही-मन पढ़ने को कहें।
- बच्चों से बारी–बारी से पूरे पाठ को हाव–भाव के साथ बोलकर पढ़ने को कहें।
- कठिन शब्दों का मतलब समझ में आने के बाद श्रुतिलेख लिखवाएँ एवं जाँचें। उन शब्दों से वाक्य बनवाएँ।
- बच्चों से पाठ को देखकर कोई दो पंक्तियाँ कॉपी में लिखने को कहें।

पुनरावृत्ति

- बच्चों को संक्षेप में कहानी सुनायें।
- बच्चों से भी संक्षेप में कहानी सुनाने की कोशिश करने को कहें।
- बच्चों से पूछें–उन्होंने क्या–क्या सीखा ?

कितने बच्चों ने क्या–क्या सीखा						
बच्चों की संख्या, जो पाठ के शब्दों को सुनकर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के शब्दों से एक वाक्य बना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के आधार पर सीधे प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान कहानी सुना सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान चित्र को देखकर उसपर बातचीत कर सकते हैं।	बच्चों की संख्या, जो पाठ के अभ्यास के दौरान पढ़े गये पाठ के बारे में जान गये हैं।	बच्चों की संख्या, जो देखकर दो पंक्तियाँ साफ–साफ लिख सकते हैं।

सीखने के बिन्दु	पहला सत्र	दूसरा सत्र	तीसरा सत्र
चित्र देखकर बातचीत करता है।			
कविता सुनाता है।			
कहानी सुनाता है।			
पूरी वर्णमाला को क्रम से लिखता है।			
संयुक्ताक्षरवाले शब्दों को पढ़ता है।			
प्रश्न पूछता है।			
प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्य में बोलता है।			
कहानी पढ़ सकता है।			
समान ध्वनि/लय वाले शब्द को लिखता है।			
संयुक्ताक्षरवाले शब्दों को लिखता है।			
शब्दों से छोटे-छोटे वाक्य बनाता है।			
सुनकर वाक्य लिखता है।			

कक्षा-II

हिन्दी